REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2026

# सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का लिंग, जाति, निवास स्थिति व आयु वर्गो के सापेक्ष तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. अवतार सिंह
सह–प्राध्यापक, शिक्षा संकाय, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश।

डॉ. रोशनी देसाई
सहायक प्राध्यापक, श्रीमती एस. आई. पटेल इप्कोवाला शिक्षा महाविद्यालय, पेटलाद, आणंद, गुजरात.

## भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन प्रणाली एवं परीक्षा सुधार : एक शोधपरक विवेचना

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में मूल्यांकन प्रणाली शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण आधार रही है। किसी भी शिक्षा प्रणाली की प्रभावशीलता का आकलन उसके मूल्यांकन तंत्र से किया जा सकता है, क्योंकि मूल्यांकन केवल विद्यार्थियों की उपलब्धियों का मापन नहीं करता, बल्कि शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की गुणवत्ता, पाठ्यचर्या की उपयुक्तता तथा शिक्षकों की प्रभावशीलता का भी संकेतक होता है। परम्परागत भारतीय परीक्षा प्रणाली मुख्यतः वार्षिक परीक्षाओं तथा अंकों पर आधारित रही है, जिसके कारण विद्यार्थियों में रटने (Rote Learning), परीक्षा–केंद्रित अध्ययन तथा प्रमाण–पत्र प्राप्ति की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला। इस प्रकार की प्रणाली विद्यार्थियों के ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा मनोचालक (Cognitive, Affective and Psychomotor) उद्देश्यों का समुचित मूल्यांकन करने में पर्याप्त रूप से सक्षम नहीं मानी गई।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय शिक्षा के पुनर्गठन के लिए गठित विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948–49) के अध्यक्ष डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से कहा था कि यदि शिक्षा व्यवस्था में केवल एक सुधार करना हो तो वह परीक्षा प्रणाली में सुधार होना चाहिए। आयोग ने परीक्षा प्रणाली को शिक्षा व्यवस्था का सबसे कमजोर पक्ष मानते हुए इसे अधिक वस्तुनिष्ठ, विश्वसनीय तथा अधिगम–उन्मुख बनाने पर बल दिया। इसके बाद माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) ने विद्यालय स्तर पर मूल्यांकन में विविधता लाने तथा केवल लिखित परीक्षाओं पर निर्भरता कम करने की अनुशंसा की।

कोठारी शिक्षा आयोग (1964–66) ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में मूल्यांकन सुधार को शिक्षा सुधार का अनिवार्य अंग माना। आयोग ने स्पष्ट किया कि बाह्य परीक्षाओं का अत्यधिक महत्व शिक्षा के उद्देश्यों को सीमित कर देता है। आयोग ने सतत आंतरिक मूल्यांकन (Continuous Internal Assessment), ग्रेडिंग प्रणाली, सेमेस्टर प्रणाली तथा विद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर बहुआयामी मूल्यांकन की संस्तुति की। आयोग का मत था कि मूल्यांकन विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास का साधन होना चाहिए, न कि केवल चयन एवं वर्गीकरण का माध्यम।

इसके उपरान्त परीक्षा सुधार समिति (1969), डोंगरकेरी समिति (1957), सीलोन परीक्षा सुधार संगोष्ठी (1970), मदुरै कार्यशाला (1974) तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा समय–समय पर जारी दिशा–निर्देशों में भी परीक्षा प्रणाली को अधिक विश्वसनीय, पारदर्शी एवं अधिगम–केंद्रित बनाने पर बल दिया

गया। इन समितियों ने आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन के संतुलित समन्वय, प्रश्न बैंक के विकास, वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उपयोग, सेमेस्टर प्रणाली तथा अंकों के स्थान पर ग्रेडिंग प्रणाली अपनाने की अनुशंसा की।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 तथा कार्ययोजना, 1992 (Programme of Action) ने मूल्यांकन प्रणाली को शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग मानते हुए विद्यालयों एवं उच्च शिक्षा संस्थानों में निरंतर मूल्यांकन को बढ़ावा देने पर बल दिया। इसके पश्चात राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF–2005) ने यह प्रतिपादित किया कि परीक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों का वर्गीकरण करना नहीं, बल्कि उनके अधिगम में सुधार करना होना चाहिए। इसी आधार पर सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (Continuous and Comprehensive Evaluation—CCE) की अवधारणा को विकसित किया गया, जिसमें विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं कौशलगत विकास का सतत मूल्यांकन करने पर बल दिया गया।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCFTE–2009) ने शिक्षक–शिक्षा संस्थानों में परावर्तनात्मक (Reflective), सहभागितापूर्ण (Participatory) तथा विकासात्मक (Developmental) मूल्यांकन की अनुशंसा की। इसके अनुसार शिक्षक–प्रशिक्षुओं का मूल्यांकन केवल लिखित परीक्षा तक सीमित न रहकर पाठ योजना, शिक्षण कौशल, परियोजना कार्य, विद्यालयीय अनुभव, प्रस्तुतीकरण, सेमिनार तथा व्यवहारिक गतिविधियों के आधार पर भी किया जाना चाहिए।

वर्तमान समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने मूल्यांकन प्रणाली में व्यापक परिवर्तन की आवश्यकता को स्वीकार करते हुए दक्षता–आधारित (Competency & Based Assessment), अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning), आलोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking), समस्या समाधान (Problem Solving), सृजनात्मकता (Creativity) तथा 21वीं शताब्दी के कौशलों के मूल्यांकन पर विशेष बल दिया है। नीति में स्पष्ट किया गया है कि परीक्षा प्रणाली का उद्देश्य विद्यार्थियों को भयमुक्त वातावरण में सीखने के लिए प्रेरित करना तथा अधिगम में निरंतर सुधार करना होना चाहिए। इसी दृष्टिकोण से विद्यालय एवं उच्च शिक्षा दोनों स्तरों पर बहुआयामी एवं सतत मूल्यांकन प्रणाली को बढ़ावा दिया जा रहा है।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा Choice Based Credit System (CBCS), सेमेस्टर प्रणाली तथा Continuous Internal Assessment (CIA) को अपनाने के निर्देश दिए गए। वर्तमान में अधिकांश विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों का मूल्यांकन आंतरिक परीक्षा, असाइनमेंट, परियोजना कार्य, सेमिनार, प्रस्तुतीकरण, समूह चर्चा, फील्ड वर्क, इंटर्नशिप तथा अंतिम सेमेस्टर परीक्षा के संयुक्त आधार पर किया जाता है। इससे विद्यार्थियों के निरंतर अध्ययन, सहभागिता एवं व्यावहारिक दक्षताओं को प्रोत्साहन मिलता है।
यद्यपि सतत आंतरिक मूल्यांकन प्रणाली के अनेक सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं, तथापि इसके क्रियान्वयन से संबंधित अनेक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। विभिन्न अध्ययनों में यह पाया गया है कि प्रशिक्षार्थियों पर असाइनमेंट एवं आंतरिक गतिविधियों का कार्यभार बढ़ जाता है। कुछ मामलों में मूल्यांकन की वस्तुनिष्ठता, पारदर्शिता तथा विश्वसनीयता पर भी प्रश्न उठाए गए हैं। विद्यार्थियों द्वारा कभी–कभी यह अनुभव किया जाता है कि आंतरिक मूल्यांकन में शिक्षक की व्यक्तिगत धारणा अथवा पक्षपात का प्रभाव पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न शिक्षण संस्थानों में मूल्यांकन के मानदण्डों में एकरूपता का अभाव भी देखा गया है। अतः यह आवश्यक है कि सतत आंतरिक मूल्यांकन प्रणाली का समय–समय पर वैज्ञानिक एवं अनुभवजन्य (Empirical) अध्ययन किया जाए ताकि इसकी प्रभावशीलता का मूल्यांकन कर आवश्यक सुधार प्रस्तावित किए जा सकें।

विभिन्न आयोगों और समितियों जैसे माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952), विश्वविद्यालय परीक्षा सुधारों पर डोंगरकेरी समिति (1957), कोठारी आयोग (1964–66), परीक्षा सुधार (1969), सीलोन की परीक्षा सुधार संगोष्ठी (1970), परीक्षा सुधारों पर मदुरै कार्यशाला (1974) और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 1971, 1973 और 1976 की कार्य योजना, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) और राष्ट्रीय शिक्षा नीति की कार्य योजना (1992), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (2005), शिक्षण शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (2009), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) ने नाना प्रकार की सिफारिशें करते हुए निम्नलिखित सार गर्भित सुधारों का संकेत दिया गया

- आंतरिक मूल्यांकन के साथ साथ बाह्य मूल्यांकन को अवश्य लागू किया जाना चाहिए।
- मूल्यांकन एक सतत एवं व्यापक प्रक्रिया होनी चाहिए।
- प्रश्न बैंकों और वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का प्रयोग।
- विश्वविद्यालयों को सेमेस्टर प्रणाली अपनानी चाहिए।

- अंक के स्थान पर ग्रेडिंग।
- राष्ट्रीय परीक्षा और
- ओपन बुक परीक्षा।

विभिन्न आयोगों और समितियों की सिफारिशों को ध्यान में रखते हुए, आंतरिक मूल्यांकन, सेमेस्टर प्रणाली, मूल्यांकन प्रक्रिया की सतत एवं व्यापकता और ग्रेडिंग, परीक्षा सुधारों के संदर्भ में चिंता के प्रमुख क्षेत्र बनकर उभरे हैं। मूल्यांकन प्रणाली की कमियों को दूर करने और छात्रों की समझ, अनुप्रयोग, कौशल, विश्लेषणात्मक और संश्लेषण क्षमताओं का परीक्षण करने के लिए, प्रणाली में प्रचलित सुधारों को समझना आवश्यक है ताकि सुधार के उपाय सुझाए जा सकें। भारतीय विश्वविद्यालयों में अपनाए गए कुछ सुधारों में सेमेस्टर प्रणाली के साथ आंतरिक मूल्यांकन, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन और अंकन के स्थान पर ग्रेडिंग शामिल हैं।

प्रस्तुत शोध में मूल्यांकन के इसी आयाम को लेकर नियोजित की गई है। शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर में मूल्यांकन प्रणाली में अधिकांश रूप से सतत आंतरिक मूल्यांकन प्रचलित है। इस प्रकार की मूल्यांकन प्र.ाली के प्रति संस्था के प्रशिक्षणार्थियों का अभिप्राय/अभिवृत्ति क्या है? क्या शिक्षा अध्ययनशाला के शिक्षा प्रशि{ा.ार्थी इस मूल्यांकन प्र.ाली से संतुष्ट है अथवा वह इस प्र.ाली में कोई सुधार लाना चाहते है? क्या मूल्यांकन प्र.ाली के सतत् व आंतरिक होने से उनके उपर कार्यों का बोझ बढ़ गया है या शिक्षकों द्वारा इस प्रणाली के छद्मवेश में भेदभाव किया जा रहा है? आदि जैसे प्रश्नों के उत्तर ढूढने के लि, प्रस्तुत शोध की संकल्पना की गई है। प्रस्तुत अध्याय में शोध समस्या को व्यापक रूप देने एवं इसमे प्रयुक्त संकल्पनाओं के बारे में विस्तृत रूप से जानने हेतु प्रयास किया गया है।

## संबधित साहित्य की समीक्षा

प्रस्तुत शोध की रूपरेखा तय करने के लिए उपरोक्त संबंधित साहित्य के सारांषों की समीक्षा से निम्न अवलोकन व निहितार्थ परिलक्षित होते है।

- अधिकांष शोध सर्वे प्रकार के थे जिनमें प्रष्नावली, मतावली, साक्षात्कार व अभिवृत्ति मापनी जैसे उपकरणों का उपयोग हुआ था।
- लेले (1962), कामत (1968), झवेरी एवं पटेल (1968), रवि (1989), डबीर (1989) के शोधों ने विद्यार्थियों का सतत आंतरिक मूल्यांकन के प्रति असंतुष्टि का होना पाया। पिल्लई (1986), मोहन (1986), मल्होत्रा, मेनन, बेदी एवं तुलसी (1989) ने भी विद्यार्थियों का सतत आंतरिक मूल्यांकन के प्रति असंतुष्ट होना एवं आंतरिक मूल्यांकन में आत्मनिष्ट होना पाया। साथ ही इन शोधों में आंतरिक मूल्यांकन के बाह्य मूल्यांकन में मिला देने से विद्यार्थियों की भावी निष्पादन के सार्थक होने पर प्रश्न चिन्ह लगाया।
- रेड्डी (1977), गुनाशेखरन एवं जयंति (1979), रसूल (1981), सरूप (1981), शर्मा (1981), रवि (1989), प्रसाद (2001), जैसे शोधों ने विद्यार्थियों का सतत मूल्यांकन के प्रति संतुष्टि व आंतरिक मूल्यांकन और बाह्य मूल्यांकन को क्रमशः विभिन्न अधिमान जैसे 50–50 प्रतिशत, 40–60 प्रतिशत अथवा 60–40 प्रतिशत आदि देने की अनुशंसा की गयी।
- सेमेस्टर प्रणाली का मूल्यांकन में सतत्ता लाने में सहयोग को टॉग (1977), पटेल (1978), अख्तर (1980), रोशतः (1980) शोधों से बल मिला।
- सतत आंतरिक मूल्यांकन से अध्ययन स्वभावों में नियमितता के आने को लोहानी (1965), अख्तर (1980), डबीर (1984), पिल्लई एवं मोहन (1986) ने अपना मुख्य निष्कर्ष बताया।
- सिंह (2007) ने शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों का सतत आंतरिक मूल्यांकन के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण पाया।
- रेड्डी (1977) ने पाया कि वह विद्यार्थी जो इस प्रकार की प्रणाली (सतत आंतरिक मूल्यांकन प्रणाली) से शिक्षण प्राप्त कर चुके थे, उनका सतत आंतरिक मूल्यांकन के प्रति अन्य के सापेक्ष अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण था।
- टॉग (1977), पटेल (1978), रोशतः (1980) एवं रवि (1989) ने पाया कि पुरूष विद्यार्थी व शिक्षकों का सतत आंतरिक मूल्यांकन के प्रति महिला विद्यार्थियों के सापेक्ष में अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण था। जबकि

पिल्लई (1979) इन शोधों के विपरीत महिला विद्यार्थियों का सतत आंतरिक मूल्यांकन के प्रति पुरूष विद्यार्थी के सापेक्ष में अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण पाया।

- रेड्डी (1979), पटेल (1978), गुनाशेखरन एवं जयंति (1979) , रसूल (1981), स्वरूप (1981), शर्मा (1981), रवि (1989), पिल्लई एवं मोहन (1986), मल्होत्रा, मेनन, बेदी एवं तुलसी (1989), प्रसाद (2001) के शोधों ने आंतरिक मूल्यांकन की वैधता एवं विश्वसनीयता पर विद्यार्थियों का विश्वसनीय न होना पाया।
- कामत (1968), गुनाशेखरन एवं जयंति (1979), पिल्लई (1979), रवि (1989) ने कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकायों के विद्यार्थियों मे सतत आंतरिक मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया। गुनाशेखरन एवं जयंति (1979), पिल्लई (1979) ने कला एवं वाणिज्य संकायों के विद्यार्थियों में सतत आंतरिक मूल्यांकन के प्रति विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की अपेक्षा सकारात्मक अभिवृत्ति का होना पाया। परंतु कामत (1968) एवं रवि (1989) ने इससे विपरीत निष्कर्ष दिया।

उपरोक्त संबंधित साहित्य की समीक्षा से प्राप्त विद्यार्थियों से यह स्पष्ट होता है कि सतत आंतरिक मूल्यांकन के क्षेत्र में विभिन्न चरों को लेकर काफी सारे शोध हुए है। यह भी स्पष्ट है कि सतत आंतरिक मूल्यांकन के क्षेत्र में व्यक्तिगत संस्थाओं से हुए शोधों का अपना महत्व है। विद्यार्थियों की शैक्षिक व शिक्षा से जुड़ी गतिविधियों के मूल्यांकन के लिए सतत आंतरिक मूल्यांकन का अपना स्थान व महत्व है। परंतु साथ ही साथ शिक्षक के व्यवहार, पूर्व शिक्षण पद्धति, संकाय, वैवाहिक स्थिति, जाति, निवास, लिंग, विद्यार्थियों की मनोदशा, आत्म संकल्पना आदि का सतत आंतरिक मूल्यांकन पर प्रभाव के बारे में, विभिन्न शोधों के निष्कर्षों के संदर्भ में स्पष्ट रूप से बता पाना कठिन है। अतः सतत आंतरिक मूल्यांकन के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति संबंधी वास्तविकता को जानने व समझने के लिए, इन का विभिन्न चरों जैसे लिंग, जाति, आवासीय परिस्थिति, आयु, वर्ग, संकाय, वैवाहिक स्थिति, कक्षा स्तर, माध्यम, शैक्षिक योग्यता एवं परीक्षा प्रणाली आदि को लेकर और शोध होने आवश्यक पाया गया।

## शोध उद्देश्य

1. शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों का सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति पद्धति के प्रतिअभिवृत्ति का आंकलन करना।
2. शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों का सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति पद्धति के प्रतिप्रतिक्रियाओं का लिंग के सापेक्ष में अध्ययन करना।
3. शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों का सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति पद्धति के प्रतिप्रतिक्रियाओं का जाति के सापेक्ष में अध्ययन करना।
4. शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों का सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति पद्धति के प्रतिप्रतिक्रियाओं का आवासीय परिस्थिति के सापेक्ष में अध्ययन करना।
5. शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों का सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति पद्धति के प्रतिप्रतिक्रियाओं का आयु, के सापेक्ष में अध्ययन करना।

## शोध की परिकल्पनाएँ

1. शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के महिला व पुरूष प्रशिक्षणार्थियों के सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति माध्य अभिवृत्ति फलांकोंमे कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के सामान्य, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति व अन्य पिछड़े वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों के सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति माध्य अभिवृत्ति फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
3. शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के ग्रामीण, शहरी व कस्बे में रहने वाले प्रशिक्षणार्थियों के सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति माध्य अभिवृत्ति फलांकोंमे कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
4. शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के विभिन्न आयु वर्गों के आधार पर वर्गीकृत प्रशिक्षणार्थी समूहों के प्रशिक्षणार्थियों का सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति माध्य अभिवृत्ति फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

## पदों की व्याख्या

1. **मूल्यांकन पद्धति** : शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों के विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों में निष्पादन को मूल्यांकन करने हेतु नियोजित प्रक्रिया से है जो कि विश्वविद्यालय अध्यादेश 14 से संकल्पित है।
2. **अभिवृत्ति** : किसी व्यक्ति, घटना, वस्तु व स्थिति के बारे में लम्बे समय तक जुड़े रहने के कारण उनके बारे में विकसित व पूर्ण सोच/नजरिया/अभिव्यक्ति ही अभिवृत्ति है।
3. **सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृत्ति का अर्थ** संस्था के विषयी अध्यापकों के द्वारा प्रशिक्षणार्थियों का विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों में उनके निष्पादन का सतत रूप से मूल्यांकन करने। इस मूल्यांकन में बाह्य शिक्षकों द्वारा मूल्यांकन कम अथवा नगण्य होने के प्रति मूल्यांकित हो रहे विद्यार्थियों के व्यवहार/सोच से है।

## न्यादर्श

प्रस्तुत शोध मे न्यादर्श विधि उद्देश्यात्मक थी। शोध में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर की शिक्षा अध्ययनशाला के सभी बी.एड., एम.एड. एवं पी. एच–डी. शिक्षा के प्रशिक्षणार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया।

## शोध प्रकल्प

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक सर्वे प्रकार की शोध थी ।

## परिसीमन

प्रस्तुत शोध देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर की शिक्षा अध्ययनशाला के सभी बी.एड., एम.एड. एवं पी. एच–डी. शिक्षा के प्रशिक्षणार्थियों तक परिसीमित थी।

## उपकरण

सतत् आंतरिक मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति के आंकलन हेतु कुमार व सिंह (2007) द्वारा निर्मित लिकेर्ट प्रकार की अभिवृत्ति मापनी को आधार बनाया गया। इसी मापनी का परिवत्यर्यतित रूप सिंह, पटेल व देसाई (2010) ने निर्मित किया। प्रस्तुत शोध के लिए, सिंह, पटेल व देसाई (2010) द्वारा निर्मित पाँच विकल्पनीय लिकेर्ट प्रकार के सतत् आंतरिक मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति मापनी का उपयोग किया गया। सिंह, पटेल व देसाई (2010) द्वारा प्रयुक्त अभिवृत्ति मापनी की विश्सनीयता गुट्ट्मन अर्ध–विच्छेद विधि (Guttman Split-half method) द्वारा 0.8476 एवं स्पेयरमान ब्राउन फॉर्मूला (Equal length Spearman Brown formula) से 0.8480 है। मापनी निर्माताओं (सिंह, पटेल व देसाई 2010) द्वारा मापनी की आमुख वैधता का निर्धारण मापनी को विषय से संबंधित विशेषज्ञों की ओर प्रेषित कर एवं उनके द्वारा दिये गए सुझावों के अनुरूप मापनी में सुधार कर किया गया । प्रदत्तों के अंतर्गत विभिन्न चरों जैसे– लिंग, जाति, आवासीय परिस्थिति, आयु, वर्ग, संकाय, वैवाहिक स्थिति के बारे में जानकारी के लिये एक सूचना पत्रक का निर्माण किया गया।

## प्रदत्तों का संकलन

जनवरी माह में शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के बी.एड., एम.एड. एवं पी. एच–डी. के 147 प्रशिक्षणार्थियों से प्रदत्तों का संकलन किया गया।

## प्रदत्तों का विश्लेषण

प्रस्तुत शोध से प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण संख्यात्मक व गुणात्मक दोनों विधियों से किया गया। संख्यात्मक विधियों में से बारंबारता गणना, मध्यमान (Mean), प्रमाप विचलन (Standard Deviation), ककुदता (Kurtosis), विषमता (Skewness), t–परीक्षण, व ANOVA का उपयोग किया गया।

## उद्देश्य के सापेक्ष मे विश्लेषण व अर्थघटन

### प्रथम उद्देश्य के सापेक्ष में विश्लेशण व अर्थघटन

प्रस्तुत शोध का प्रथम उद्देश्य ''शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के विद्यार्थियों का सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृत्ति का आंकलन करना'' था। इस उद्देश्य के लिए मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृत्ति के आकलन हेतु अभिवृत्ति मापनी का उपयोग किया गया। प्रस्तुत शोध से प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण संख्यात्मक विधियों से किया गया। संख्यात्मक विधियों में से बारंबारता गणना, मध्यमान (Mean), प्रमाप विचलन (Standard Deviation), ककुदता (Kurtosis), वैषम्यता (Skewness), t–परीक्षण, व ANOVA का उपयोग किया गया। शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के विद्यार्थियों का सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृत्ति के बारे में प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त विवरण को निम्न तालिका 1 में दर्शाया गया है।

**तालिका 1 : मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृत्ति संबंधी विवरणात्मक संख्याकिकी**

| N | MEAN | MEDIAN | MODE | SD | SKEWNESS | KURTOSIS |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 147 | 140.97 | 139 | 151 | 17.14781 | -0.241 | 0.126 |

सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृत्ति संबंधी विवरणात्मक साख्याकिकी तालिका 1 से स्पष्ट है कि शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इनदौर के प्रशिक्षणार्थियों की सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृत्ति के फलांकों का माध्य 140.97 है। अभिवृत्ति मापनी से अधिकतम 200 एवं न्यूनतम 40 अंक प्राप्त किए जा सकते थे। इस अधिकतम व न्यूनतम प्राप्त किए जा सकने प्राप्तांकों का माध्य 120 होता है। जबकि शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्राप्त अनुमान क्षमता के प्राप्तांकों का 140.97 है जो कि प्राप्त किए जा सकने वाले प्राप्तांकों के माध्य से अधिक है। निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों का सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृत्ति औसत से अधिक अर्थात् सकारात्मक है।

वैषम्यता के नकारात्मक मूल्य 0.241 से स्पष्ट है कि सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृत्ति के फलांकों की अधिकांश संख्या माध्य के दायी ओर है। अर्थात् सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृत्ति का वितरण धनात्मक वैषम्यता वाला हैं

सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृत्ति फलांकों से ककुदता का मूल्य 0.126 है। इससे स्पष्ट है कि वितरण तुंगककुदी है। अर्थात् एक ही अभिवृत्ति फलांकों वाले प्रशिक्षणार्थियों की संख्या अधिक है।

### द्वितीय उद्देश्य के सापेक्ष मे विश्लेषण व अर्थघटन

प्रस्तुत अध्ययन का द्वितीय उद्देश्य ''शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों का सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति पद्धति के प्रतिप्रतिक्रियाओं का लिंग के सापेक्ष में अध्ययन करना। '' था। इस उद्देश्य के लिए मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृत्ति के आकलन हेतु अभिवृत्ति मापनी के उपयोग से प्राप्त फलांकों से चर के सापेक्ष विश्लेषण सांख्याकिकी विधि **t-**परीक्षण का उपयोग कर लिया गया।

शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों का लिंग के आधार पर मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृत्ति माध्य फलांकों की तुलना करने के लिये शून्य परिकल्पना ''शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के महिला व पुरूष प्रशिक्षणार्थियों के सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति माध्य अभिवृत्ति फलांकोंमें कोई सार्थक अंतर नहीं होगा'' का निर्माण किया गया था। इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए संबंधित प्रदत्तों का विश्लेषण स्वतंत्र टी–परीक्षण विधि द्वारा किया गया जिसका विवरण निम्न तालिका 2 में किया गया है।

**तालिका 2 : लिंग के आधार पर मूल्यांकन पद्धिति के प्रति अभिवृत्ति फलांकों की तुलना**

| लिंग | N | Mean | SD | df | t | P –value (2-tail) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 93 | 140.806 | 17.13835 | 145 | 0.160 | 0.873* |
| पुरूष | 54 | 141.2778 | 17.32096 | | | |
| कुल | 147 | | | | | |

***सार्थक नहीं**

उपरोक्त सारणी 2 से स्पष्ट है कि df =145 के साथ प्राप्त 't' का मान 0.160 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। इसलिए शून्य परिकल्पना ''शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के महिला व पुरूष प्रशिक्षणार्थियों के सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति माध्य अभिवृत्ति फलांकोंमें सार्थक अंतर नहीं होगा'' निरस्त नहीं की जाती है। निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर में प्रशिक्षणार्थियों की मूल्यांकन अभिवृत्ति लिंग से स्वतंत्र है।

### 4.2.2 मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृत्ति का जाति के आधार पर विश्लेषण व अर्थघटन

प्रस्तुत अध्ययन का तृतीय चतुर्थ पंचम उद्देश्य शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों का सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति पद्धति के प्रतिप्रतिक्रियाओं का जाति के सापेक्ष में अध्ययन करना।

शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों का जाति के आधार पर मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृत्ति माध्य फलांकों की तुलना करने के लिए शून्य परिकल्पना ''शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के सामान्य, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति व अन्य पिछड़ा वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों के सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति माध्य अभिवृत्ति फलांकोंमें कोई सार्थक अंतर नहीं होगा'' का निर्माण किया गया था। इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए संबंधित प्रदत्तों का विश्लेषण एक मार्गीय ऐनोवा द्वारा किया गया जिसका विवरण निम्न तालिका 3 में किया गया है।

**तालिका 3 : जाति के आधार पर प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यांकन के प्रति माध्य अभिवृत्ति फलांकों की तुलना**

| विचलनशीलता का स्त्रोत | df | SS | MSS | F | P –value |
|---|---|---|---|---|---|
| समूहों के बीच | 3 | 420.032 | 140.032 | 0.471 | 0.703* |
| समूहों के अंदर | 143 | 42510.907 | 297.279 | | |
| कुल | 146 | | | | |

***सार्थक नहीं**

उपरोक्त सारणी 3 से स्पष्ट है कि सामान्य, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति व अन्य पिछड़ा वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों के लिए F का मान 0.471 है जो कि df (3/143) पर सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसलिए शून्य परिकल्पना ''शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के प्रशिक्षणार्थियों के सामान्य, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति व अन्य पिछड़ा वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों के सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति माध्य अभिवृत्ति फलांकोंमें सार्थक अंतर नहीं होगा'' को निरस्त नहीं किया जाता है। निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों का मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति जाति से स्वतंत्र है।

## मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृत्ति का निवास के आधार पर विश्लेषण व अर्थघटन

अध्ययन का तृतीय उद्देश्य शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों का सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति पद्धति के प्रतिप्रतिक्रियाओं का आवासीय परिस्थति के सापेक्ष में अध्ययन करना।

शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों का निवास के आधार पर मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृत्ति माध्य फलांकों की तुलना करने के लिये शून्य परिकल्पना ''शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के ग्रामीण, शहरी व कस्बे में रहने वाले प्रशिक्षणार्थियों के सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति माध्य अभिवृत्ति फलांकोंमें कोई सार्थक अंतर नहीं होगा'' का निमार्ण किया गया था। इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए संबंधित प्रदत्तों का विश्लेषण स्वतंत्र टी–परीक्षण विधि द्वारा किया गया जिसका विवरण निम्न तालिका 4 में किया गया है।

**तालिका 4 : निवास के आधार पर प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यांकन के प्रति माध्य अभिवृत्ति फलांकों की तुलना**

| लिंग | N | Mean | SD | df | t | P –value (2-tail) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शहरी | 98 | 140.78 | 17.06 | 145 | **0.193** | **0.847*** |
| ग्रामीण | 49 | 141.36 | 17.49 | | | |
| कुल | 147 | | | | | |

***सार्थक नहीं***

उपरोक्त सारणी 4 से स्पष्ट है कि df=145 के साथ प्राप्त 't' का मान 0.193 है जो कि सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसलिए शून्य परिकल्पना ''शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के ग्रामीण, शहरी व कस्बों में रहने वाले प्रशिक्षणार्थियों के सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति माध्य अभिवृत्ति फलांकोंमें सार्थक अंतर नहीं होगा'', को निरस्त नहीं की जाती है। अतः निंष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों की मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति निवास स्थिति से स्वतंत्र है।

## मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृत्ति का वैवाहिक स्थिति के आधार पर विश्लेशण व अर्थघटन

प्रस्तुत अध्ययन का तृतीय चतुर्थ पंचम उद्देश्य शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों का सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति पद्धति के प्रतिप्रतिक्रियाओं का आयु, के सापेक्ष में अध्ययन करना।

शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों का वैवाहिक स्थिति के आधार पर मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृत्ति माध्य फलांकों की तुलना करने के लिए शून्य परिकल्पना ''शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के विवाहित व अविवाहित प्रशिक्षणार्थियों के सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति माध्य अभिवृत्ति फलांकोंमें कोई सार्थक अंतर नहीं होगा'' निर्माण किया गया था। इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए संबंधित प्रदत्तों का विश्लेषण स्वतंत्र टी–परीक्षण विधि द्वारा किया गया जिसका विवरण निम्न तालिका 5 में किया गया है।

**तालिका 5 : वैवाहिक स्थिति के आधार पर प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यांकन के प्रति माध्य अभिवृत्ति फलांकों की तुलना**

| वैवाहिक स्थिति | N | Mean | SD | df | t | P –value (2-tail) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| विवाहित | 42 | 143.35 | 18.56 | 144 | **1.094** | **0.276*** |
| अविवाहित | 105 | 139.92 | 16.56 | | | |
| **कुल** | **147** | | | | | |

****सार्थक नहीं***

उपरोक्त सारणी 5 से स्पष्ट है कि df=144 के साथ प्राप्त 't' का मान 1.094 है जो कि सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसलिए शून्य परिकल्पना ''शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के विवाहित व अविवाहित प्रशिक्षणार्थियों के माध्य में सार्थक अंतर नहीं होगा'' निरस्त नहीं की जाती है। निंष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर में प्रशिक्षणार्थियों का मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति वैवाहित स्थिति से स्वतंत्र है।

## मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृत्ति का आयु वर्गो के आधार पर विश्लेशण व अर्थघटन

प्रस्तुत अध्ययन का तृतीय चतुर्थ पंचम उद्देश्य शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों का आयु वर्ग के आधार पर मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृत्ति माध्य फलांकों की तुलना करने के लिये शून्य परिकल्पना ''शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के विभिन्न आयु वर्गो के आधार पर वर्गीकृत प्रशिक्षणार्थियों के सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति माध्य अभिवृत्ति फलांकोंमें कोई सार्थक अंतर नहीं होगा'' का निर्माण किया गया था। इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए संबंधित प्रदत्तों का विश्लेषण एक मार्गीय ऐनोवा द्वारा किया गया जिसका विवरण निम्न तालिका 6 में किया गया है।

**तालिका 6 : आयु वर्गो के आधार पर प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यांकन के प्रति माध्य अभिवृत्ति फलांकों की तुलना**

| विचलनशीलता का स्त्रोत | df | SS | MSS | F | P –value (2-tail) |
|---|---|---|---|---|---|
| समूहों के बीच | 4 | 301.044 | 1204.17 | **1.024** | **0.397*** |
| समूहों के अंदर | 142 | 293.850 | 41726.76 | | |
| **योग** | 146 | | | | |

****सार्थक नहीं***

उपरोक्त सारणी 6 से स्पष्ट है कि F का मान 1.024 है जो कि df=4/142 पर सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसलिए शून्य परिकल्पना ''शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न आयु वर्गो के आधार पर वर्गीकृत प्रशिक्षणार्थियों के सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति माध्य अभिवृत्ति फलांकोंमें कोई सार्थक अंतर नहीं होगा'' निरस्त नहीं की जाती है। निंष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर कें प्रशिक्षणार्थियों का मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति आयु वर्गो से स्वतंत्र है।

## शोध के प्रमुख निष्कर्ष/परिणाम

प्रस्तुत शोध के प्रमुख परिणाम निम्न है।

1. शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों की मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृत्ति के फलांकों का माध्य 140.97 एवं वैषम्यता के नकारात्मक मूल्य 0.241 से स्पष्ट है कि शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों का सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के

प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक है। मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृत्ति फलांकों से ककुदता का मूल्य 0.126 है। इससे स्पष्ट है कि वितरण तुंगककुदी है। अर्थात् एक ही अभिवृत्ति फलांकों वाले प्रशिक्षणार्थियों की संख्या अधिक है।

2. शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर में प्रशिक्षणार्थियों की मूल्यांकन अभिवृत्ति लिंग से स्वतंत्र है। अर्थात महिला एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृति एक समान पाई गई ।
3. शक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों का मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति जाति से स्वतंत्र है। अर्थात विभिन्न जाति वर्गो जैसे सामान्य, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति व अन्य पिछड़े वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों की सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृति एक समान पाई गई ।
4. शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों की मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति निवास स्थिति से स्वतंत्र है। अर्थात विभिन्न निवास स्थिति जैसे ग्रामीण, शहरी व कस्बे में रहने वाले प्रशिक्षणार्थियों की सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृति एक समान पाई गई ।
5. शक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर कें प्रशिक्षणार्थियों का मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति आयु वर्गो से स्वतंत्र है। अर्थात विभिन्न आयु वर्गो कें प्रशिक्षणार्थियों की सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति अभिवृति एक समान पाई गई ।

## उपसंहार

कोई भी प्रणाली परिपूर्ण नहीं होती, सभी प्रणालियों में हमेशा सुधार की आवश्यकता हमेशा बनी रहती है। इसलिए प्रत्येक प्रणाली में उसके गुण एवं दोषों का आंकलन कर उसमे सुधार सतत रूप से लाया जाना चाहिए। इसी दर्शन के आधार पर सतत आंतरिक मूल्यांकन प्रणाली का विकास हुआ है। जिसे भारतीय शिक्षा प्रणाली ने हाथों हाथ समाविष्ट किया है। प्रस्तुत शोध सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का कक्षा स्तर, माध्यम, शैक्षिक योग्यता एवं परीक्षा प्रणाली के सापेक्ष तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न चरों जैसे लिंग, जाति , निवास स्थिति व आयु वर्गो का सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है। एवं इन चरों के सापेक्ष शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति समान रूप से सकारात्मक पाई गई है।

इससे स्पष्ट है कि सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति सकारात्मक रूप से विभिन्न चरों को समान रूप से प्रभावित कर रही है। प्रस्तुत शोध से शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रशिक्षणार्थियों की सतत मूल्यांकन प्रणाली के प्रति सकारात्मक अभिवृति से इस प्रकार की मूल्यांकन प्रणाली को भारतीय परिपेक्ष में कार्यान्वित करने में सहायता एवं शोध आधार मिलेगा। प्रस्तुत शोध मूल्यांकन के विषय में भविष्य में होने वाली शोधों के लिए सहायक सिद्ध हो सकेगा।

## संदर्भ सूची

1. अस्थना, डी.व्ही. (1990) : मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन. आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।
2. भटनागर, एस. (1997) : आधुनिक भारतीय शि{ाा– मेरठ– आर– लाल बुक डिपो।
3. पाल, एच. आर. एवं शर्मा, मंजुलता (1997) : मापन/आकलन एवं मूल्यांकन. दिल्ली : क्षिप्रा प्रकाशन।
4. शर्मा, आर (1995). शैक्षिक मूल्यांकन, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।
5. भट्टाचार्य, जी सी (2012) : अध्यापक शिक्षा. आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन।
6. Akhtar, R.P. (1980). A Critical study of the semester system in selected Universities in India, Ph.D. Thesis, Baroda: CASE, The M.S. University of Baroda.
7. Association of the Indian Universities (1977): Monograph of Grading for Universities, New Delhi: NCERT.
8. Association of the Indian Universities (1977): Monograph on Internal Assessment for Universities, New Delhi: NCERT.
9. Awasthi, K. (2005): A Study of Attitude towards teaching of IGNOU-B.Ed. Students, an unpublished M.Ed. Dissertation, Vadodara: CASE, The M.S. University of Baroda.

10. Best, J.W. (1981): Research in Educatin, 4th Edition, New Delhi: Prentice Hall of India Private Limited.
11. Desai, D.M. (1970): Some Critical issues of Higher Edudcation in India, Mumbai: Educational Publisher.
12. Edwards, A.L. (1969): Techniques of Attitude Scale construction, Bombay: Vakils' Feffer and Simons Pvt. Ltd.
13. Fishbein, M. (1967): Reading in Attitude Theory and Measurement, New York: John Wiley and Sons.
14. Garrett, H.E. & Woodworth, R.S. (1966): Statistics in Psychology and Education (11th ed.), New York: David Mekay Company.
15. Ghosh, J. (2006, June, 17). Case for caste-based Quota in Higher Education. Economic and Political Weekly, Vol. 2428(24), pp.15-18.
16. Gunasekaran, K. and Jayanthi, P. (1979). A study of Continuous Internal Assessment and the University Examination marks of the Undergraduate Semester couses. In M.B. Buch (ed.), (1979). Third Survey of Educational Research, New Delhi: NCERT.
17. Jayawal, S.R. (1988). Human Factor in Continuous and Comprehensive Evaluation. In B. Shah (ed.) Revamping the Examination System, New Delhi: Northern Book Centre. Pp.87-94.
18. Kumar, S. (1990). Comparative Reliability of Grading and Marketing, A Resarch Project, Baroda: The M.S. University of Baorda.
19. Kumari, R. (1990). An Investigation into the Evaluation Procedures of some of the Faculties of M.S. University, An Published M.Ed. Dissertation, Baroda: The M.S. University of Baorda.
20. Likert, R. and Hayes, S.P. (1932). Some application of Behaviroal Research, Geneva: UNESCO.
21. Lohani, R.K. (1965). A Study of the System of Internal Assessment in Secondary Schools. Baroda: CASE, The M.S. University of Baorda.
22. Malhotra, M.M., Menon, P.N., Bedi, S.P. and Tulsi, P.K. (1989). Status study of internal assessment of students in the polytechnics of Haryana. In M.B. Buch (ed.), (1988). Fifth survey of Educational Research, New Delhi: NCERT.
23. Marlene, E.H., Morris, L.L. and Gibbon, C.T.F. (1945). How to Measure Attitudes, New Delhi: Sage Publication.
24. Murthy, S.R.M. (1988), Introduction of comprehensive and Continuous Evaluation, Revamping the Examination System, New Delhi: Northern Book Centre. Pp.165-170.
25. Narsian, S.D. (1978). Innovations in Higher Education in India. Baroda: CASE, The M.S. University of Baroda.
26. Natarajan, V. (1979). Monograph on semsester system for universities, New Delhi: Association of Indian Universities.
27. Qureishi, Z.M. (2000). Attitudes and their Measurements, Research Methodology, Vadodra: CASE, The M.S. University Baroda.
28. Scriven, M. (2000). Evaluation Thesaurus, New Delhi: Sage Publication.
29. Sekar, G. (2004). Continuous Internal Assessment: A Need of the Hour, University News, 42(33), pp 16-22.
30. Shah, B. (1988). Need and Significance of Continuous and Comprehensive Evaluation. Revamping the Examination System, New Delhi: Northern Book Centre. pp. 155-164.
31. The Controller of Publications. (1986), Report of National Commission on Teachers-II (1983-85), Governmet of India, New Delhi: NCERT.

32. Tong, P.S. (1977). A Study of Pre-University Student and Semester System in Thailand, an unpublished M.Ed. Dissertation, Baroda: CASE, The M.S. University of Baroda.
33. Tiwari, D. (1988). Comprehensive Evaluation: Need of today, In B. Shah (ed.) Revamping the Examination System, New Delhi: Northern Book Centre. pp. 133-140.
34. Thurston, L.L. and Chave, E.J. (1929). The Measurement of Attitude, Chicago: The University of Chicago Press.
35. University Grants Commission (1962 & 1976). Report on Examination Reform, New Delhi: UGC.
36. Upasani, N.K. (1978). Evaluation in Higher Education: Theory and Practice, Bombay: Examination Reform Unit.